अभिमन्यु-वध
पं० रामचंद्र शुक्ल 'सरस'

अभिमन्यु-बध

—:०:—

ब्रज-भाषा

खंड-काव्य

रचयिता

श्रीयुत् पं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस'

प्रकाशक

राय साहब रामदयाल अगरवाला

प्रयाग

१९३२

प्रथम बार १००० } मूल्य { साधारण-संस्करण ।।)
राज-संस्करण ।।।)

निवेदन

—+ ++ ‡§‡ ++ +—

भगवान् वेद-व्यास-विरचित परम पवित्र एवं प्रशस्त महाभारत का पाठ जिस समय हमारे पूज्यपाद पिता जी, आजसे दो वर्ष पूर्व, करते थे और मुझे उसके सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तो एक दिन अभिमन्यु के कथा-प्रसंग को सुनकर मेरे मन में सहसा ही अभिमन्यु पर कुछ लिखने का विचार उत्पन्न हुआ और उसी रात्रि को सोने के पूर्व तीन छन्द:—नं० १७, ३४ और १२९ बन गये।

सबसे प्रथम मैंने इन्हें पूज्य श्री० 'रसाल' जी के सम्मुख रक्खा। उन्होंने दो छन्द और लिखकर एक "अभिमन्यु-पंचक" बनाने के लिये कहा। इसके कुछ ही दिन पश्चात् श्री० 'रत्नाकर' जी प्रयाग आये और हमें उनका भी इन कवित्तों के सुनाने का अवसर मिला। उन्होंने हमसे अभिमन्यु-बध की पूर्ण कथा लिखने के लिये कहा। अस्तु, जब जब हमें अवकाश मिलता गया हम दो-दो तीन-तीन छन्द इस प्रसंग के लिखते गये। जब "हिन्दी-साहित्य के इतिहास" की देख भाल का कार्य हमें करना पड़ा तब इसकी गति स्थगित हो गई और उसके प्रकाशित हो चुकने पर ही इसकी रचना का कार्य पुनः प्रारम्भ हो सका।

इसी बीच में हमने अपने कुछ छन्द स्थानीय रसिक-मंडल के अधिवेशनों में सुनाये, जिन्हें सुन कर श्रीयुत् डाक्टर रामप्रसाद

जी त्रिपाठी, पं० देवी दत्त जी शुक्ल, सं० 'सरस्वती', एवं अन्य महानुभावों ने हमसे इस पुस्तक को शीघ्र समाप्त करके छपवाने का अनुरोध किया। किन्तु हमने "काव्य-मीमांसा" नामक पुस्तक का लिखना प्रारम्भ कर दिया था, जिसके समाप्त हो कर प्रकाशित होने में लगभग चार पाँच महीने लग गये अस्तु इस पुस्तक का कार्य्य फिर ज्यों का त्यों ही पड़ा रह गया।

अब इस नवीन वर्ष के प्रारम्भ में इसका छपना भी प्रारम्भ हुआ और आज ईश्वरानुकम्पा से यह पुस्तक आप लोगों के सम्मुख उपस्थित हो सकी। आशा है कि यह आप लोगों का कुछ मनोरंजन कर सकेगी।

हमारे कतिपय मित्रों ने हमसे इस बात का भी आग्रह किया कि इसके पीछे एक छोटी सी शब्दार्थ-सूची भी जोड़ दी जाय अतएव उनकी इच्छानुसार परिशिष्ट रूप में आवश्यक शब्दों की सूची अकारादि क्रमानुसार तैयार करके जोड़ दी गयी है जिससे आशा है हमारे नवयुवक-विद्यार्थियों को पर्याप्त सुविधा होगी।

इस कथानक के इतिवृत्त को महाभारत के ही अनुसार चलाने का प्रयत्न किया गया है, जहाँ कल्पना से भी काम लिया गया है वहाँ भी घटनाओं की तथ्यता पर ध्यान रखते हुए उसे यथोचित मर्यादा और सीमा के ही अन्दर रक्खा गया है, और अनीप्सित स्वच्छंदता नहीं दी गयी।

इसकी भाषा में साहित्यिक ब्रजभाषा की एक रूपता का स्थिरता से पालन करने का प्रयत्न किया गया है और यथासम्भव प्रान्तिक-प्रयोगों को दूर ही रक्खा गया है

जिससे भाषा की शुद्धता को किसी प्रकार के विकार से बाधा न पहुँच सके।

अन्त में हम धन्यवाद देते हैं अपने उन मित्रों और महानुभावों को जिनके अनुरोध ने हमें इसे लिखने को प्रेरित किया और साथ ही साधुवाद देते हैं राय साहब लाला रामदयाल अगरवाला को जिन्होंने इसे बड़ी तत्परता से प्रकाशित कर काव्य-प्रेमियों के सन्मुख उपस्थित करने का हमें अवसर दिया है।

" रमेश-भवन "
प्रयाग।
१२—१—३२

विनीत
—रामचन्द्र शुक्ल "सरस"

* ओ३म् *

मङ्गलाचरण

—:(०):—

लीन्हैं छत्र-चँवर सदाई संग राजै जय,
बिजय बिराजै जौ पराजय हर्‌यौ करै।
'सरस' बखानै, मंजु मुख-मुसकानि, कानि,
कलित कृपा की बानि कलुख दर्‌यौ करै॥
दुति दसनावलि की दीपति दिगन्तनि लौं,
बिपति-घनाली कौ घनौ तम गर्‌यौ करै।
बीर-बर पारथ महारथ कौ सारथ सो,
सारथ हमारौ पुरुषारथ कर्‌यौ करै॥

❀ ❀ ❀

अभिमन्यु-वध

[१]

दिन दिन दूनी देखि बिजय बिपच्छिनि की ,
नृप दुरजोधन की मति बिकलानी है ।
'सरस' बखानै, सल्य-करन-दुसासन त्यों ,
सकुनी असकुनी पै जाइ यों बखानी है ॥
सूझत न एकौ अङ्क , रङ्क मति मैं उपाय ,
बिथकित हाय ! ह्वै अजौंहूँ अकुलानी है ।
भीषम गये औ द्रौन मौन से भये हैं अब ,
तुम सबहूँ कैं होत , होति हित-हानी है ॥

[२]

कहत दुसासन उसाँसनि सँभारि यहै,
जीतौ जाय भीम जौ असीम बलखानी है।
'सरस' बखानै, कहै करन धनञ्जय कैं,
जीतैं जय, किन्तु कहै सकुनि प्रमानी है॥
धरम-सपूत ही बिचारियै बिधायक त्यौं,
नायक अनी कौ अवनी कौ भटमानी है।
काहू भाँति नीति कै अनीति छल-बल हूँ कै,
लीजै ताहि बाँधि यौं सबै कैं मनमानी है॥

[३]

द्रौन-ढिग आय सबै कीन्हीं मिलि मत्रना यौं,
याही एक यंत्रना दियै तैं पार परिहै।
'सरस' बखानै, त्यौं प्रचारि रन पारथ सौं,
कोऊ महारथ और ठौर जाय भिरिहै॥
जानत न भेदिबे कौ भेद कोऊ ऐसौ एक,
चक्रब्यूह कै अन्यूह द्रौन जुद्ध करिहै।
तामैं फेरि घेरि कै अजीत पांडु-पूतन कौं,
जीति कै हमारौ बिजै-संख ब्योम भरिहै॥

[४]

बादि बकबाद कै बिबाद ना बढ़ायौ पुनि,
एक ही दृढ़ायौ यहै कीन्हौ ठीक ठायौ है।
'सरस' बखानै, कै बिसर्जित समाज बेगि,
ताज दै गुरू कौं कुरुराज फिरि आयौ है॥
होत पुनि प्रात सबै साज साजि तैसौ इत,
सप्तक सौं पारथ कौं टेरि अरुझायौ है।
उत बिरचाय सुदुरूह ब्यूह द्रौन-द्वारा,
दूत कौ बुझाय धर्मराज पैं पठायौ है॥

[५]

जै जै धर्मराज! राज-बंस-अवतंस-हंस!
नैसुक हमारी इती कान करि लीजियै।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै कुरु-राज-दूत,
उर कौ सबैई छल-छूत दूरि कीजियै॥
कीजै या दुरन्त रनहूँ कौ अन्त एकै करि,
टेकै धरि सैन कौ न लोहू और छीजियै।
कै तौ चक्रब्यूह भेदि लीजै जय गौरव सौं,
कौरव कौं कै तौ जय-लेख लिखि दीजियै॥

[६]

दीजै जाय उत्तर हमारौ दुरजोधन कौं,
पथ परिसोधन कौ हमकौं दिखैहै को ?
'सरस' बखानैं, यौं प्रमानैं धर्मराज धीर,
बीर बिजयी जौ, तिन्हैं हारिबौ सिखैहै को ??
चक्रधर जोगीस्वर चक्र-भेद-दच्छ जाकैं,
पच्छ माहिँ, ताकौं कै कुचक्र बिलखैहै को ?
जौलौं जै-बिजै के ईस कीन्हैं छत्र-छाया सीस,
तौलौं जय-पत्र कहौ हम सौं लिखैहै को ??

[७]

एहो दूत ! पाण्डु-पूत वीर बिग्रही ह्वै पंच,
रंच ही मैं बिग्रही प्रपंच-सत हरि हैं।
जौलौं धर्म-धूम तौलौं मसक करैंगे कहा ?
नर-हरि-ओर कहा ससक निहरि हैं ??
सक्र-मदहारी चक्रधारी जौ हमारी ओर,
ह्वै कै रखवारे चक्रधारे नित्त हरि हैं।
ऐसौ तौ कुचक्र रच्यौ एकै चक्रव्यूह कहा,
कोटि चक्रव्यूह सौं न पांडु-पूत हरि हैं ॥

[८]

कुरुपति-दूत पाय उत्तर सिधाये उत,
चिन्ता धर्मराज कैं हियैं यौं इत ब्यापी है।
'सरस' बखानै, अनुमानी न परिस्थिति त्यौं,
इस्थिति न जानी गुरुता की छाप छापी है॥
कहत कही तौ, सही ह्वैहै यह कैसैं हाय!
जाकैं बल भूलि कही, दूरि सो प्रतापी है।
जैहै हाय! नाक ना कही मैं त्यौं नसैहै हाँक,
धाँकहू न रैहै सत्यता की जाहि थापी है॥

[९]

आँस भरि आँखिनि उसाँस भरि धर्मराज,
माथ धरि हाथ रहे साँस भरि उद्र मैं।
'सरस' बखानै, उर जानै कहा सोचि कह्यो,
सत्य-बल ह्वैहै छय हा! हा! छल-छुद्र मैं॥
कृष्ण-कर्नधार-संग पारथ अकारथ ही,
धायौ नाम-नौका-हित उत रन-रुद्र मैं।
हाय! हरुओ ह्वै इत लाज कौ जहाज आज,
डूबत दुरूह चक्रब्यूह कैं समुद्र मैं॥

[१०]

सुनि-गुनि ऐसी धर्मराज की, अनैसी लेखि,
देखि रहे सकल सभा के भकुवाये से।
'सरस' बखानै, धीर द्रुपद बिराट बीर,
सत्यकी असत्य की बिजै पै भे चकाये से॥
चित्र-लिखे मानौ सहदेव औ नकुल रहे,
प्रबल असीम भीम अबल अवाये से।
हिम्मत हरास ह्वै हतास हिय हारि रहे,
सोचत उदास उत्तरेस हूँ सकाये से॥

[११]

आई ब्यूह-भेदन-क्रिया की सुधि ज्यौं ही किन्तु,
गर्भ माँहि अर्भक-दसा की बुधि जागी है।
'सरस' कहै, त्यौं सब्यसाँची-सुत-आनन पै,
औरै ओप आई जो कछूक कोप-पागी है॥
नयन-सरोजनि मैं आयौ नयौ रंग, अंग-
ओजनि समायौ, चित्त-चिन्ता सब भागी है।
थरकन लागी रद-कोर कुटिलौं हैं होय,
भौंहैं दोय, बीर-बाहु फरकन लागी है॥

[१२]

उमँगि समन्यु अभिमन्यु बीर बोल्यौ तात !
होहु ना अधीर, भीरि यह दरि दैहौं मैं ।
'सरस' बखानै चक्रव्यूह कौ कुचक्र भेदि,
चक्रधर-सिच्छा की समिच्छा करि लैहौं मैं ॥
दुष्ट दुरजोधन, दुसासनादि कौरव कौ,
गौरव-गुमान ह्वै सरुष्ट गरि दैहौं मैं ।
राखि रजपूती, बैठि रावरे कृपा-रथ पैं,
पारथ की सारथ सपूती करि ऐहौं मैं ॥

[१३]

सुनि अभिमन्यु की उमंग भरी बानी बर,
बीर भये दंग रंग औरै अंग चढ़िगो ।
'सरस' बखानै, किन्तु धर्मराज ह्वै प्रसन्न,
सन्न ह्वै रहे त्यों द्विबिधा सौं मन मढ़िगो ॥
चाहत सराहत हियैं मैं बाल-पन लेखि,
बालपन देखि हाँ, नहीं, कछू न कढ़िगो ।
त्यौं ही भीम भाखे तात! माखे मन काहे, सुनौ,
ब्यूह है हमारौ, जौ दुलारौ बीर बढ़िगो ॥

[१४]

दीजै बेगि आयसु अनीहूँ चलै जै जै टेरि,
हाँ, हाँ, करि बोले सबै याही चित्त ठावैं हम।
'सरस' बखानै, कह्यौ धर्मराज साधु ! सुनौ,
जो कहो सही सो, क्यों न ऐसौ पै बनावैं हम॥
आवन न दीजै आँच यापैं मिलि कीजै पाँच,
काँचौ काँच जैसौ निज लाल तौ पठावैं हम।
हाँ, हाँ, कै सबै गे उत, उत्तरेस बोल्यौ इत,
साजो सूत ! स्यंदन, बिदा लै अबै आवैं हम॥

[१५]

उठत करेजौ अनायास आजु काँपि काँपि,
चाँपि चाँपि चिन्ता उठै चित्त मैं अजानी सी।
'सरस' बखानै, कहै उत्तरा न जानै सखि !
काहे लखि भौन मौन उठति गलानो सी॥
रहि रहि नैन दाहिनोई फरकै है अरु,
छाती धरकै है भूरि भीति मैं समानी सी।
ह्वैहै आजु कैसी धौं अनैसी हे बिधाता ! हाय !
भावना अनैसी आय ब्यापति अठानो सी॥

[१६]

पारथ-कुमार सुकुमार उत्तरा पैं आय,
माँगी त्यौं बिदाई बीर-बानक बनाई है।
'सरस' बखानै, अनुमानै है तहाँ की समा,
सोचि सुखमा सौ उर उपमा उराई है॥
असुरनि-संग रन-रंग रचिबै कौं बिदा,
माँगत सची सौं ज्यौं सचीस सुर-राई है।
पाय अमरेस कौ निदेस रुद्र-रन हेत,
लेत रति-नाथ कैधौं रति सौं बिदाई है॥

[१७]

राजैं हैं किरीट मनि-मंडित-मुकुट सीस,
कंचन कैं कुंडल बिराजैं श्रुति-बर मैं।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु कैं छपाकर लौं,
सबल-सनाह सजी दीपै देह भर मैं॥
राखति कृपा न जौ कृपान पानि राजै एक,
छाजैं बर-बान मनौ भानु-कर कर मैं।
कंध पैं कमान मान बैरिनि कौ भंग करै,
दंग करै देखत निखंग परिकर मैं॥

[१८]

रासि रस-राज की बिराजि रही मूरति पैं,
मुद्रा मुख-हास कैं बिलास की ढरी परै।
'सरस' बखानै, करुना को छाँह कोयनि मैं,
लोयनि मैं लाली रुद्रता की उतरी परै॥
बक्र भृकुटीनि मैं भयानकता खेलै भूरि,
अद्‌भुत आभा-सान्त-भाव सौं भरी परै।
उर उभरी सी परै बीर रस को तरङ्ग,
अंग प्रति अंग सौं उमङ्ग उछरी परै॥

[१९]

पेखि उत्तरा कौं मौन बोल्यौ अभिमन्यु बीर,
कठिन समस्या एक एकाएक आई है।
उत अरुझे हैं पितु-मातुल हमारैं, इत-
ब्यूह रचि द्रौन जीतिबे की घात लाई है॥
जानत न ताको कोऊ भेद, खेद आनैं सबै,
हौं ही एक जानौं पितु गर्भ मैं सिखाई है।
यातैं बेगि दीजै बिदा सारथ सपूती करौं,
नातरु नसैहै सबै, जो बनी बनाई है॥

[२०]

लखि निज नाथ-नैन रक्त , बर बैन ब्यक्त ,
सुनि-गुनि बीरि-बधू उत्तरा सकाई है।
त्यौं ही कर्न-द्रौन-दुरजोधन से जोधन की,
दारुन लराई चित्त चित्रित लखाई है॥
देखि सौम्य-सूरति बिसूरति त्यौं जुद्ध-दृस्य ,
इत उत हेरै सुधि-बुधि बिकलाई है।
मंगल-अमंगल कैं परि असमंजस मैं,
हाँ न करि आई औ नहीं न करि आई है॥

[२१]

बस धरि धीर बीर नृपति बिराट-सुता,
पंच दीप-आरती उतारन जबै लगी।
'सरस' बखानै, पैठि बैठि उर-अंतर मैं,
औरै कछू भारती उचारन तबै लगी॥
कंपित सी ह्वै कै भई झंपित सी दीप-सिखा ,
बाम ओर औचकि सधूम ह्वै दबै लगी।
चकि, जकि, थहरि थिरानी यौं अनैसी लेखि ,
देखि मुख , ध्यावन त्यौं सुरनि सबै लगी॥

[२२]

जै जै आर्जपूत ! पुरहूत आदि छाया करैं,
दाया करैं श्रीहरि हरैं जे सूल गाढ़े हैं।
'सरस' बखानै, उत्तरा यौं सुभ-आसिख दै,
तिलक सुभाल पैं कितेक बार काढ़े हैं॥
करत पयान लै दिखाई मांगलीक-बस्तु,
बोली "सुभमस्तु" नैन नेह-आँस बाढ़े हैं।
चूमि कर-पल्लव लगाय उर उत्तरेस,
आय द्वार देख्यौ सूत स्यन्दन लै ठाढ़े हैं॥

[२३]

एहो! बीर सारथी ! चलौ तौ 'जै मुरारि' बोलि,
रारि मोल और अब रंचक न लैहौं मैं।
'सरस' बखानै, त्यौं पुरानौ सबै लेखा लेखि,
दैहौं हाथ खोलि कछू बादि ना करैहौं मैं॥
सब कैं समच्छ लच्छ बाँधि कोटि जोरि जोरि,
धनु लै समूल चक्र-ब्याज-दरि दैहौं मैं।
काल नियरायौ है, निधन करि बैरिन कौं,
रिन कौं निबेरि त्यौं अबेर ही चुकैहौं मैं॥

[२४]

जै जै पूज्य-पारथ-सपूत ! सुनौ, बोल्यौ सूत,
रावरी रजायसु हमारैं सिर-माथ हैं।
द्रौन रन-पंडित अखंडित-प्रताप-दाप,
कूट-नीति-मंडित प्रतापी कुरु-नाथ हैं॥
बीर-ब्रतधारी साहसी ह्वै चाप-धारी आप,
बैस सुकुमारी, काज भारी लिये हाथ हैं।
'सरस' बखानै, करैं किन्तु औ परन्तु यातैं,
जानत हूँ साथ मैं अनाथनि के नाथ हैं॥

[२५]

मम प्रति प्रेम औ कृपा कौ रावरौ जौ भाव,
चाव चित्त सूतजू ! सदा सो सरस्यौ करै।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै है सुभद्रानंद,
सोई मुख-चंद सुधा-बैन बरस्यौ करै॥
लेखत अबै लौं सुकुमार हमैं आये अरु,
देखत कुमार-रूप हिय हरस्यौ करै।
यातैं तुम बीरता न धीरता हमारी लखौ,
साँची कहैं जैसौ भाव तैसौ दरस्यौ करै॥

[२६]

राघव–कुमार लव–कुस के चरित्र चारु,
नैसुक पवित्र हे सुमित्र ! चित्त आनियै।
'सरस' बखानै, राम-लखन कुमारनि की,
बीरतादि बालमीकि–ग्रंथ सौं बखानियै ॥
मृग-पति-सावक कौं जैसै गजराज-जोग,
जग-जन मानैं त्यौं हमैं हूँ आप मानियै।
बैस माँहि जानियै भले ही हमैं ऊन किन्तु,
न्यून और काहू माँहि काहू सौं न जानियै ॥

[२७]

हम सुनि राखी सत्य-भाखी मुख-भाखी यह,
यह जग-जाल पंच भौतिक प्रपंच है।
'सरस' बखानै, त्यौं इहाँ कौ सबै कारबार,
सार–हीन बात मैं बनायौ मनौं मंच है ॥
तन मन सारौ छन हीं मैं छय होनवारौ,
इन सब मैं तौ सत्व-हीन तत्व पंच है।
राखत जय–श्री कौ उछाह जस–देह–चाह,
और परवाह बीर राखत न रंच है ॥

[२८]

निज अभिमान, मान औ गुमान हूँ की हम,
सूत जू! अपूत छल-छूत की बखानैं ना।
'सरस' कहै, त्यौं कुल-कानि-आनि ही की कहैं,
साँची कहैं हाँ की हो, स्वभाव की प्रमानैं ना॥
अतुल बली जौ तात-मातुल प्रचारैं क्रुद्ध,
तौहूँ जुद्ध जोरैं हम खेद मन आनैं ना।
द्रौन, कृप, कर्न, कृतबर्म, कुरुराज कहा,
हम जमराज के बबा सौं भीति मानैं ना॥

[२९]

पुनि अभिमन्यु कह्यो, देखो सूत! बैरिन सौं,
'त्राहि त्राहि पारथ सपूत' यों कढ़ैहों मैं।
'सरस' बखानै, आजु देखत अखंडल कैं,
बंस-महिमा सौं महि-मंडल मढ़ैहों मैं॥
छाँटि भट-भीरनि कौं काल-कुंड पाटि-पाटि,
काटि-काटि मुंड मुंडमालो पैं चढ़ैहों मैं।
तीरनि कैं पिंजर मैं बमकत बीरनि कौं,
कीरनि लौं आनि राम-राम ही पढ़ैहों मैं॥

[३०]

खलबल भारी खल-बल मैं मचैगो जब,
बाननि की बिकट घनाली घिरि जायगी।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै अभिमन्यु बीर,
परि रथ चाल भानुहूँ की थिरि जायगी ॥
हलचल ह्वैहै अचला कौ चलकारी इमि,
जातैं फनि-पति की फनाली फिरि जायगी।
काया जुद्ध-भूमि माँहि यह गिरि जायगी कै,
आज धर्मराज की दुहाई फिरि जायगी ॥

[३१]

करत मनोरथ यौं रथ पैं सुभद्रा-सुत,
बीर-रस कैसौ अवतार नयौ साजै है।
'सरस' बखानै, संग सैन सूर-बीरनि की,
ताकैं ज्यौं बिभाव-भाव लै प्रभाव राजै है ॥
आयौ पास समर-थली कैं रथ माँहि बली,
चौंकि रिपु-सैन चली सोचि भानु आजै है।
लखि अभिमन्यु कौं जितै के ते तितै के रहे,
चकित चितै कै रहे सोचि को बिराजै है ॥

[३२]

पेखि अभिमन्यु कौं समन्यु कहै कोऊ यह,
गेय कार्तिकेय कौ अजेय अवतार है।
मूरति बिलोकि सौम्य 'सरस' प्रमानै कोऊ,
ओज-भरौ साँचौ यह मार-सुकुमार है।।
गौरव बिचारि कहै कोऊ यह कौरव कौ,
प्रगट्यौ पराभव भयङ्कर अपार है।
कोऊ त्यौं बखानै, अभिमन्यु बेष-धारी जिष्णु,
त्रिष्णु सेस-सायी बन्यौ पारथ-कुमार है।।

[३३]

कहत दुसासन सँभारि कै उसाँसन हूँ,
यह तौ त्रिबिक्रम कौ बिक्रम-बिसाल है।
'सरस' बखानै, आय करन प्रमानै यह,
कैतौ जामदग्नि, अग्निदेव कै कराल है।।
सोचत जयद्रथ महद्रथ, भयङ्कर ह्वै,
आयौ प्रलयङ्कर त्रिसूलो महाकाल है।
बोले द्रौन बिहँसि, हमारैं सिष्य पारथ कौ,
कौसल कृतारथ लड़ैतौ यह लाल है।।

[३४]

सुबरन-स्यंदन पै सैलजा-सुनंदन लौं,

सुभट सुभद्रा-सुत ठमकत आवै है।

'सरस' बखानै, कर बीर बास पूरौ कियैं,

श्रीहरि सिँगार-रस गमकत आवै है॥

कैधौं दिब्य-दाम अभिराम आफताब-आब,

दाब तम-तोम-ताब तमकत आवै है।

दमकत आवै चारु चोखौ मुख-मंद हास,

कर बर चंदहास चमकत आवै है॥

[३५]

पारथ-कुमार! सुकुमार मार हूँ तैं तुम,

'सरस' सलोनी बैस सोभा सरसाये हौ।

यह अनुहारि कौं निहारि अनुमानैं हम,

मानैं मृगया कौं चलि भूलि इत आये हौ॥

कहत जयद्रथ, अयान यह जानै कहा,

तुम तौ सयान, सूत! यान किमि लाये हौ।

निठुर युधिष्ठिर के आये धौं पठाये इत,

ठाये चित कैसौ हित-अहित भुलाये हौ॥

[३६]

नृपति जयद्रथ ! महद्रथ गुमानी सुनौ,
बिनु छल-सानी यह जैसी कछू भाखौं मैं।
'सरस' बखानै, यों प्रमानै अभिमन्यु आन,
ध्यान कै तिहारो छल-छिद्र मन माखौं मैं॥
जा मुख सौं बालक बताय हँसै ता मुख कौं,
कन्दुक कै बीर-चाल ह्वैगौ अभिलाखौं मैं।
जासौं किन्तु मीच नीच ! रावरी लिखी है ताही,
पूज्य पितु-बान हेत तेरौ सीस राखौं मैं॥

[३७]

सुनि कटु बैन यों जयद्रथ रिसौंहैं हेरि,
भौंहैं फेरि दीन्ह्यौ बेगि हाथ धनु-सर मैं।
'सरस' बखानै, कह्यौ मूरख न मानै जु पै,
जानैगो हमैं तौ जबै जैहै जम-घर मैं॥
याकौं कै सुनी औ असुनी सी उत्तरेस तौलौं,
ताकि तीर तमकि पँवारे हरबर मैं।
दोख्यौ दाहिने मैं सिंधुराज कैं समूचौ धनु,
ऊँचौ उठि आयौ किन्तु आधौ बाम कर मैं॥

[३८]

ऐसी छुद्र-छोटी पुनि टूटो धनुहोँ लै तुम,
गोपि रन-रुद्र श्री बिजै की लहिबौ चहौ।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु मुसकाय कह्यौ,
जात हम द्वार सौँ गहौ जौ गहिबौ चहौ॥
तजि मरजाद, सिंधुराज! परि पाछैँ पुनि,
आय बड़वागि सौँ दहौ जौ दहिबौ चहौ।
नातरु हमारी कृपा, रावरी त्रपा कौ भार,
टारन कौँ सीस तैँ रहौ जौ रहिबौ चहौ॥

[३९]

रहि-रहि धाय दीठि सत्र ओर जाय ठहि,
बहि-बहि ब्रह्म-अस्त्र लौँ प्रबाह कर कौँ।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु यौँ प्रमानै पुनि,
जात जरौ लोहू मन्युसौँ सरीर भर कौँ॥
कलमख वारौ, कटु, कारौ औ नकारौ कहूँ,
होतौ जौ न खारौ, अनिखारौ, दोखकर कौँ।
तौ पुनि तिहारौ सिंधुराज! आज जीवन लै,
देतौ अर्घ रुचि सौँ रिझाय दिनकर कौँ॥

[४०]

राघव-समान हाथ-लाघव बिलोकि तासु,
सिंधुराज चाहि औ सराहि हियैं रहिगे।
'सरस' बखानै, धनु टूटे, भये ऐसे त्रस्त,
अस्त्र-सस्त्र एक हूँ न क्यौं हूँ कर गहिगे॥
राजनि की ओर हेरि लाजनि समाये जौलौं,
भौचकि भुराये देखि कौतुक यौं ठहिगे।
तौलौं उत्तरेस के अमोघ बर बाननि सौं,
चक्रव्यूह-द्वार के महान खंभ ढहिगे॥

[४१]

भंग भयौ देख्यौ द्वार, लेख्यौ अभिमन्यु-रंग,
दंग औ हतास ह्वै जयद्रथ लजाये हैं।
'सरस' बखानै, 'धन्य पारथ-सपूत! धन्य!,'
'जै जै धर्मराज' टेरि भीमादिक धाये हैं॥
सिव-बर सोचि सिंधुराज त्यौं उठाय माथ,
"जै जै भूतनाथ" कहि बान बरसाये हैं।
दहि-दहि पांडव ह्वै खांडव कैं रूख रहे,
सूख रहे कै-कै सत्र पै न पैठि पाये हैं॥

[४२]

बढ़त बिलोकि बीर बालक कौं ब्यूह माँहि,
कौरव-अनी के बीर नीके जुटि-जुटिगे।
'सरस' बखानै, अस्त्र-सस्त्र बहु भाँतिन कैं,
तिनकैं अनेक नेक ही मैं छुटि छुटिगे॥
छूटत छुटे पैं उत्तरेस-तीर-तोखन सौं,
भोखन वै बीचै टूक टूक टुटि टुटिगे।
देखत हा देखत कितेक निधनी के धन,
राजनि के रतन-रँगीले लुटि-लुटिगे॥

[४३]

निज प्रिय पारथ कौ सुघर सपूत पेखि,
गुरुबर द्रौन–उर प्रेम उमँगायौ है।
'सरस' बखानै, मूलहूँ तैं ब्याज प्यारौ होत,
सोई चाव-भाव आय आँखनि पुरायौ है॥
हिय हुलस्यौ त्यौं मुख चूमि अंक आनिबै कौं,
औसर कौ ध्यान आन बिबस बनायौ है।
कीन्ह्यौ ज्यौं सराहि चाहि आसिख उचारन कौं,
गर गरुवायौ. बोलि बचन न आगौ है॥

[४४]

बिबस बिलोकि चित-चाहो करिबै मैं इमि,
द्रौन निरुपाय ह्वै निहारि नैकु नहिगे।
'सरस' बखानै, परी मंद सी अनीठि-दीठि,
प्रेमानंद-आँसुनि सौं लोचन उमहिगे॥
सुमति भुलानो कर-अकर दुमारग मैं,
प्रान प्रीति और नीति-जालनि उलहिगे।
कर धनु ताने द्रौन मोचत न बान मौन,
औचकि भुराये भूलि भौचकि से रहिगे॥

[४५]

सुभट सुभद्रा कौ सपूत तबलौं ही धाय,
मृदु मुसुकाय भाय प्रगटि दिखाये हैं।
'सरस' बखानै, बीर ब्यौम-बीच बाननि सौं,
'श्रीगुरु-प्रनाम'-अंक अंकित कराये हैं॥
पुनि सर-सुमन सँवारि कल-कौसल कै,
पंचसर के से पंच सर यौं पठाये हैं।
एक करि घात रंच, द्वै त्यौं पद पूजि परे,
सेस रज पावन की पावन लै आये हैं॥

[४६]

कौसल लखे जौ भई द्रौन कौं प्रसन्नता सो,
चाहिबौ बिहाय और रोचनि न देति है।
'सरस' कहै, त्यौं आनि कानि करुना की सौं है,
होन तिरछौं हैं कछू लोचनि न देति है॥
ह्वै पुनि सक्रुद्ध जुद्ध जोरिबे की बात कहा,
गात ओरिबे की घात सोचनि न देति है।
कायर कहैबे की त्रपा जौ लै गहावै धनु,
बानि तौ कृपा की बान मोचनि न देति है॥

[४७]

करि सब भाव लोप औरै चित चोप चढ़्यौ,
औरै कोप-ओप सौं मुखारबिन्द मढ़िगो।
'सरस' कहै, त्यौं अभिमन्यु-अंग-अंगनि पैं,
जंग की उमंगनि लै रौद्र-रंग चढ़िगो॥
संकर महान प्रलयङ्कर पैं ज्यौं मनोज,
ओज आनि द्रौन पैं त्यौं तानि बान बढ़िगो।
'जै जै कृष्ण' टेरत निबेरत सुभट-भीर,
हेरत ही हेरत सुबीर द्वार कढ़िगो॥

[४८]

आयौ ब्यूह-द्वारनि सौं कढ़ि, बढ़ि मध्य माँहि,
रीति भेदिबे की भली भाँति अनुसारते ।
'सरस' बखानै, ह्वै प्रफुल्लित सुभद्रानन्द,
मंद-मुख-हास कौ बिलास-सुख सारते ॥
बोल्यौ, हे सुमित्र-मित्र ! कौसल बिचित्र देखि,
दाबि दाँत-आँगुरी अमित्र हिय हारते ।
आसिख जौ होती मिली मातु-पितु-मातुल सौं,
जानियै न जानैं तौ कहा धौं करि डारते ॥

[४९]

एहो बीर-सारथी ! प्रचार्यौ पारथी यौं सुनौ,
भारत कौ भार तौ हमारैं अब माथ है ।
'सरस' बखानै, भीरु ह्वै न उर ऊनौ करौ,
दूनौ करौ साहस, कहा जौ बक्र पाथ है ॥
भाथ है हमारौ भरौ भूरि भीति-भेदक सौं,
छेदक दुरूह-ब्यूह हूँ कौं धनु साथ है ।
हाथ है हमारैं तौ मनोरथ, चलैबौ अरु,
रथ कौ चलैबौ त्यौं तिहारैं अब हाथ है ॥

[५०]

स्यंदन सुमित्र सूत हाँक्यौ कै बिचित्र ढंग,
रिपु-दल देखि दंग ह्वै अति चकायौ है।
'सरस' बखानैं, कर्न-द्रौन लौं प्रबुद्ध सुद्ध,
बीरनि हूँ माया-जुद्ध ताहि ठहरायौ है॥
सकल चमू मैं चलै चक्र लौं चहूँघा चारु,
कौंधि चंचला लौं नींठि दीठि चौंधियायौ है।
रंच न थिरात, जात मन कैं मनोरथ लौं,
एक ह्वै अनेक बीर ब्यापक लखायौ है॥

[५१]

रथ-गति देखि चकी मति मतिमाननि की,
'धन्य! धन्य! सारथी'! इतोई कहि आवै है।
कोऊ पौन-गौन, चंचला कैं सम कोऊ कहै,
कोऊ कहै तेज-तीर कैं समान धावै है॥
ईमि उपमानैं, अनुमानैं अरु मानैं सबै,
'सरस' बखानैं हमैं औरै कछू भावै है।
निमि-बस वारे नर-नैननि की दीठि कहा,
ताकैं सम देव-दीठि हूँ न दौरि पावै है॥

[५२]

रथ अभिमन्यु कौ निहारि हिय-हारि रह्यौ,
रबि-रथ जाकौ जसालोक लोक छायौ है।
'सरस' बखानै, त्यौँ तुरंग-रंग देखि-देखि,
हय-पति दंग-बदरंग ह्वै लखायौ है॥
त्यौँ ही पारथी कैँ सारथी की आतुरी बिलोकि,
चातुरी बिहाय इन्द्र-मातलि लजायौ है।
अरुन कह्यौ त्यौँ रह्यौ तरुन जबै मैँ तब,
स्यंदन सुमित्र लौँ बिचित्र यौँ चलायौ है॥

[५३]

स्यंदन बिलोकि पांडु-नंदन कैँ नंदन कौ,
बीर-कुरु नंदन कैँ ऐसे अकुलाने हैँ।
'सरस' बखानै, ज्यौँ बितुंड-झुंड हारि हियैँ,
सारदूल सावक निहारि बिकलाने हैँ॥
सक्र-सम ताकौ तेज ताकि त्रस्त ह्वै कै अक्र,
भारी भट भीरु भये भीति मैँ भुलाने हैँ।
बाज लखि कौतुक बिलात ज्यौँ बिपंचिनि कैँ,
रंच मैँ प्रपंचिनि-प्रपंच त्यौँ बिलाने हैँ॥

[५४]

सुभट सुभद्रा-सुत बीरनि की भीरनि मैं,
चारौ ओर केसरी-किसोर लौं गराजै है।
'सरस' बखानै, देखि भीरि रिपु-आनन की,
आनन की ओप लै सचोप कोप छाजै है॥
रंग बदरंग त्यौं बिपच्छिनि कौं दंग देखि,
रंग निज लेखि मंद-हास मुख राजै है।
रौद्र-रस राँज्यौ त्यौं भयानक सौं माँज्यौ मनौं,
बीर-रस हास कैं बिलास मैं बिराजै है॥

[५५]

तमकि तपाक सौं सुभद्रा कौ लड़ैतौ लाल,
लाल करि नैन सिंह-सावक लौं गाजै है।
'सरस' बखानै, ज्या-निनाद सौं दिसानि पूरि,
कंचन-कोदंड पै प्रचंड सर साजै है॥
बान-झरि लाये मंडलाकृत सुचाप-बीच,
मंजु मुसुकात मुख-मंडल यौं राजै है।
सारत मयूख लौं मयूख रबि-मंडल पै,
करत अमंगल ज्यौं मंगल बिराजै है॥

[५६]

परम तरंगी रन-रंगी पारथी है बीर,
तीखे-तीर आनि भट-भीरि छाँटि देत है।
करि प्रलयंकर, भयंकर सक्रुद्ध जुद्ध,
रुद्र लौं बरूथिनि-समुद्र पाटि देत है॥
'सरस' कहै, त्यौं बाल-प्रकृति-कुतूहल कै,
काहू कौं बिचारि डरपोक डाँटि देत है।
नासा–कान काहू कैं हँसी ही मैं निपाटि देत,
कौतुक सौं काहू की कलाई काटि देत है॥

[५७]

बढ़ि बर बीर-भीर काटि-छाँटि तीखे तीर,
अस्त्र–सस्त्र केतिक सधीर ह्वै पँवारे हैं।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु चातुरी सौं तिन्हैं,
आवत ही आतुरी सों निपट निवारे हैं॥
मन्द मुसुकात जात ब्यूह मैं बिलोकि ताहि,
अस्मकेस उर मैं उमाहि ज्यौं प्रचारे हैं।
आधौ कह्यौ पायौ कह्यौ चाह्यौ उत्तरापति सौं,
आहत ह्वै आधौ लियैं स्वर्ग कौं सिधारे हैं॥

[५८]

बिसिख-बिसाल-जाल-रुद्ध अपने कौं देखि,

क्रुद्ध ह्वै सुभद्रा-सुत तीखे तीर ताने हैं।

'सरस' बखानै, भट-भीरि करि छिन्न-भिन्न,

खिन्न ह्वै कछूक त्यौं अचूक अस्त्र आने हैं॥

आगैं आय सल्य बिद्ध ह्वै कै सल्य-जालिनि मैं,

गिरत अचेत रथ-दंड पैं थिराने हैं।

लखि यह अक्र भये बीर बक्र भौंहैं तानैं,

सौंहैं पग आनैं पै पिछौंहैं ह्वै पराने हैं॥

[५९]

पावस मैं मंडल दिखात चन्द्रमा पैं जैसौ,

तैसौ मंडलाकृत सरासन लखावै है।

हाथ पारथी कौ भाथ-भीतर सिधावै कबै,

सायक निकास औ बिकास कबै पावै है॥

'सरस' बखानै, अनुमानै पै न जानै और,

मानै मुख-मंडल सौं तेज-तीर धावै है।

लेखन मैं आवै ना परेखन मैं आवै पुनि,

देखन मैं आवै ना निरेखन मैं आवै है॥

[६०]

खर सर मारि पंच-बीस लै दुसासनि कौं,
बात ही मैं गात छलनो लौं छेदि दीनौ है।
'सरस' बखानै, पर्‌यौ रथ पै अचेत ऐसौ,
फूलो तरु-किंसुक कट्‌यौ ज्यौं पर्‌यौ पीनौ है॥
निरखि दुसासन-दसा यौं भज्यौ सारथी ज्यौं,
पारथी त्यौं मंद-मुसकाय हास कीनौ है।
जा! रे नीच पापी! सुप्रतापी को सँघारिबौ औ,
नारि कौ उघारिबौ समान करि लीनौ है??

[६१]

पौन-गतिमान तेजवान प्रलयानल लौं,
ऐसौ महा बान एक उत्तरेस आन्यौ है।
'सरस' बखानै, पांडवीय गांडवीय जैसौ,
भारी धनु आनि ताहि कान लगि तान्यौ है॥
मार्‌यो है दुसासन की छाती ताकि ज्यौं ही त्यौं ही,
बेधि हँसली कौं भूमि सायक समान्यौ है।
मानौ पंखवान उड़ि ऊपर फनीस फेरि,
फुफकत फारि तरु-बिल मैं बिलान्यौ है॥

[६२]

देखत दुसासन-हुतासन सिराई सबै,
पारथी-प्रसंसा-पाठ ठाठ सौं पढ़ै लगे।
'सरस' बखानै, 'जै जुधिष्ठिर' कै पांडवहूँ,
करत सक्रुद्ध जुद्ध-तांडव बढ़ै लगे॥
इन्द्र-पवनादि, चित्र-चित्रित सुकेतु-जुक्त,
धृष्टिकेतु आदि बीर चायनि चढ़ै लगे।
पर्न-सम त्यौं ही तिन्हैं पाछैं पारि कर्न बेगि,
आछैं पारथी कौं सायकानि सौं मढ़ै लगे॥

[६३]

कांपि अभिमन्यु रन-रोपि ज्यौं टँकोर्यौ धनु,
काँपि उर चाँपि रहे सूर-सरकस लौं।
'सरस' बखानै, यौं सँधानै बीर तीर-भीर,
रूँधि रन-धीर भये कीर परबस लौं॥
तोलन न पावैं धनु, खोलन न पावैं मुख,
सनमुख बोलन न पावैं करकस लौं।
देखत ही देखत बनावै बीर बाननि सौं,
आननि रिपूनि कैं खुले पैं तरकस लौं॥

[६४]

कौसल-धनी लौं अभिमन्यु-रनी-कौसल यौं,
देखि गुरु द्रौन सौं सराहि चाहतै बन्यौ ।
'सरस' बखानै, उमगान्यौ इमि छोह-मोह,
द्रोह-कोह टारि प्रेम-बारि बहतै बन्यौ ॥
दूरि दुरै द्वेष-दुराभाव, त्रपा कौ प्रभाव,
साँचौ कृपा-भाव कौ स्वभाव गहतै बन्यौ ।
पारथ पिता ह्वै धन्य ! ऐसैं सुत-सारथ कौ,
पारथ-गुरू ह्वै धन्य ! हौं हूँ कहतै बन्यौ ॥

[६५]

सुनि-लखि ऐसो दुरजोधन अनैसी मानि,
आनि सब जोधन पै बचन उचारौ है ।
'सरस' बखानैं, सुनी, द्रौन जौ प्रमानैं इतै,
'धन्य अभिमन्यु ! धन्य पारथ ! हमारौ है' ॥
धन्य हम ! जाकैं सिष्य-बर कौ सपूत ऐसौ,
जैसौ ना रह्यौ है, बीर है, न होनवारौ है ।
पारथ लौं सिष्य, सिष्य-पूत अभिमन्यु जैसौ,
द्रौन जैसौ कौन है गुरू न जाहि प्यारौ है ॥

[६६]

जीतै सत्रु-पच्छ सिष्य वारौ, कै हमारौ पच्छ,
जीति रन-दच्छ-द्रौन ही कैं दुहूँ कर मैं।
गुरु को कहा है कुरुराज कहै जोधनि सौं,
सिष्य-सुत जीतैं जस दूनौ जग भर मैं॥
'सरस' बखानैं, गुनी-गनक प्रमानैं यहै,
मानैं हम सोई लेखि लीला यौं समर मैं।
जापैं दीठि देत नीठि ताकी तौ करै समृद्धि,
बृद्धि ना करै है गुरु बैठै जाहि घर मैं॥

[६७]

ऐसौ चाव भाव कैं प्रभाव सौं प्रभावित ह्वै,
व्यर्थ है बिचारिबौ कि याकौं द्रौन मरिहैं।
लखि अपनो हूँ सुदूरूह-व्यूह खंडित यौं,
कहि रन-पंडित प्रसंसा तासु करिहैं॥
'सरस' बखानैं, हम बिलग न मानैं तऊ,
आनैं भीति, ऐसी नीति सौं न पार परिहैं।
हारि रहे हिम्मति निहारि बाल-किम्मति जौ,
तुम सबहूँ, तौ बिना मारैं हम मरिहैं॥

[६८]

लखि अभिमन्यु-अस्त्र-सस्त्र सौं समस्त सैन,
त्रस्त-छिन्न-भिन्न-खिन्न ह्वै कैं बिकलानी है।
'सरस' बखानै, द्रौन-कर्न आदि जोधन सौं,
नृप दुरजोधन सभीत यौं प्रमानी है॥
एक लघु बालक बिनासे देत सैन सबै,
ठाढ़े चित्र-काढ़े तुम कैसी भीति आनी है।
मति बिकलानी, थकि-थहरि थिरानी गति,
किम्मति किरानो किधौं हिम्मति हिरानो है॥

[६९]

चारि दिन ही कौ एक बालक अयान आय,
मारि यौं मचाई हारि सैन अकुलानी है।
'सरस' बखानै, लियौ आपुनेई हाथ खेत,
भागे भटमानी भूरि भीरुता समानी है॥
तुम सबहूँ ह्वै गूढ़ जुद्ध के बिजेता बीर,
ताकत बिमूढ़ लौं यौं ताकत थिरानी है।
चातुरी चुकानी चकि, आतुरी लुकानी किधौं,
जगत-प्रमानी सब सूरता सिरानी है॥

[७०]

निज-निज निंदित बिकारन-निकारन कौं,
प्रथम अकारन महारन यौं रोप्यौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं प्रपंच रचि पंचनि कैं,
आगे रे अभागे! दोख मम मुख छोप्यौ है॥
बढ़ि-बढ़ि बातैं करि गढ़ि-गढ़ि घातैं पुनि,
स्वारथ हमारौ, परमारथ हूँ लोप्यौ है।
छीजत अनीक लखि बिलखि सुजोधन यौं,
कहि कटु बैन छुद्र-नीति-पटु कोप्यौ है॥

[७१]

खावैं मार चार बार, पावैं पुनि मारि जऊ-
एक बार हूँ, न तऊ पाछैं पग पारैं हम।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानै कुरुराज-सैन,
मन्यु-भरौ काल अभिमन्यु कौं बिचारैं हम॥
काहू की न बूझै कोऊ, सूझै है न आपुनपौ,
जूझै अनी आपुनी घनी सहाय सारैं हम।
चलत न एकौ, हाय! थकित उपाय भये,
कैसौ कुरुराय! करैं जानि कै न हारैं हम॥

[७२]

सम्मुख भई है दुःखदायी जोगिनी धौं आजु,
होतौ न तौ ऐसौ, एक बालक सौं हारैं हम।
'सरस' सुनावैं, यौं बतावैं बीर लै उसाँस,
बड़े-बड़े आँस यौं लहू कैं हाय! ढारैं हम॥
सक्र के बिजेता द्रौन, कर्न, आपु, अक्र भये,
बक्र बिधि ह्वै गये हमारैं धौं बिचारैं हम।
बादि ही हमैं तौ कुरुराज! यौं धिकारैं आपु,
आपै आपु आपुने कौं आपु ही धिकारैं हम॥

[७३]

अछत तिहारैं छत-बिच्छत ह्वै हारैं हाय!
साँसन की आस न दुसासन की ह्वै रही।
'सरस' बखानै, गहि हाथ कुरुनाथ कह्यौ,
देखौ कर्न! सैन ह्वै अनाथ, भीति भ्वै रही॥
पारथ-कुमार-मार जैसौ सुकुमार ही की,
बाननि की मारि देखि याननि मैं ग्वै रही।
ब्यूह-गत नृपति-समूह-पति आपति मैं,
करन तिहारैं इन करन कौं ज्वै रही॥

[७४]

देखि थिति व्यथिति अनी की यौं अनोकी कर्न,
बेगि रन-कौसल-धनी की ओर धायौ है।
'सरस' बखानै, लै सँधाने घने अस्त्र-सस्त्र,
त्रस्त उत्तरेस ह्वै न तौ हूँ अकुलायौ है॥
पैने पर्व-जुक्त भल्ल-बान कै बिमुक्त बीर,
काटि धनु-छत्र-ध्वजा भूमि पैं गिरायौ है।
सारथी-समेत कै अचेत कर्न हूँ कौं बेगि,
पारथी महारथी समोद मुसुकायौ है॥

[७५]

ब्याकुल बिलोकि कर्न कौं यौं कर्न-बन्धु बेगि,
क्रोध सौं समाकुल ह्वै ज्वाला-सम तमक्यौ।
'सरस' बखानै, त्यौं टँकोरत प्रत्यंचा-घोर,
लपट-समान उत्तरेस-ओर लमक्यौ॥
घालि दस बान, ध्वजा-छत्र करि छिन्न-भिन्न,
खिन्न-पारथी औ सारथी कौं देखि दमक्यौ।
कुसुम-समान काटि एक बान ही सौं सीस,
आहुति लौं लैकै अभिमन्यु हँसि ठमक्यौ॥

[७६]

लखि यह बिलखि बढ़्यौ है भटमानी कर्न ,
बह्नि-बर्न ह्वै कैं पारथी सौं आय जूझ्यौ है ।
'सरस' बखानै , उत्तरेस बढ़ि बाननि सौं ,
प्राननि निवारि मारि ताकौ सब लूट्यौ है ॥
पुनि बढ़ि बीर, बाहिनी कौं सुनाराचनि की ,
आँचनि की दाह सौं दह्यौ, न कोऊ छूट्यौ है ।
छूट्यौ है सबै कौ धीर, बीर तीन-पाँच ह्वै कैं,
नौ-द्वै अर्ध बायस भे , चक्रव्यूह टूट्यौ है ॥

[७७]

माची मार ऐसी उत्तरेस बर-बाननि की ,
प्राननि की आँधी उठी भैरवीय-सुर मैं ।
'सरस' बखानै , महि-मण्डल पैं छाये रुण्ड ,
मुंड मँडराये त्यौं ख-मंडल-सुपुर मैं ॥
बैठि गई जच्छ-मंडली सकाय दृस्य देखि ,
पैठि गई चिंता लेखि औरै सुरासुर मैं ।
ऋषि-मुनि-धारना कवंध-ओर धाय चली ,
राहु-सुधि आय चली भानु हूँ कैं उर मैं ॥

[७८]

ह्वै है हाय ! कैसौ अब ऐसौ भयो भारी जुद्ध ,
रुद्ध पथ देखि देवतादि घबरावैं हैं ।।
'सरस' बखानै, देखि मार अस्त्र-बाननि की ,
त्रस्त्र किन्नरादिक अधीर ह्वै परावैं हैं ।।
ह्वै कै बान-बिद्ध गिद्ध जैसे मँडरावैं गज ,
भागे सिद्ध-दिग्गज सभीत थहरावैं हैं ।
देखि रुंड-मुंड राहु-केतु सौं सकाने ग्रह ,
बिग्रह बिलोकि न उपग्रह थिरावैं हैं ।।

[७९]

प्रलय-प्रचंडानल-तुल्य सारथी सौं त्रस्त ,
ह्वै कैं अस्त-व्यस्त भट भाजत ज्यौं हेर्‌यौ है ।
'सरस' बखानै, बृषसेन से रथीनि आय ,
प्रमुख महारथीनि धाय ताहि घेर्‌यौ है ।।
सारथी-बिहीन बृषसेन सौं बित्रस्त अस्व ,
भाजे पारथी कैं, सारथी पै तिन्हैं फेर्‌यौ है ।
मारि सप्त-सायक बसाती,बमक्यौ ज्यौं त्यौं ही ,
उत्तरेस-बान सीस ताकौं काटि गेर्‌यौ है ।।

[८०]

बाजि जिमि झपटि झकोरै लै लवा कौँ तिमि,
उत्तरेस सत्यश्रवा कौँ गहि झकोर्‌यौ है।
'सरस' बखानै, बढ़ै जौ ही बर-बंड ताहि,
श्रौनित-नदी मैँ खंड खंड करि बोर्‌यौ है॥
दाप करि चाप कैँ टँकोरत पराने रथी,
अस्त-व्यस्त ह्वै महारथीनि मुख मोर्‌यौ है।
ओर्‌यौ है न कोऊ पुरहूत-पूत-पूत-घात,
भागे भट जात, कोऊ समर न जोर्‌यौ है॥

[८१]

मद्र-नृप-सुवन सुनाय भद्र बैन आय,
धीरज बँधाय धाय पारथी सौँ भिरिगौ।
'सरस' बखानै, उत्तरेस हँसि बोल्यौ अरे!
का तिरै रनोदधि, न बाप सौँ जौ तिरिगौ॥
घाले सल्य-सुत कैँ बिषैलै षट-आननि सौँ,
आहत ह्वै बीर बस ताही सौँ अभिरिगौ।
रुक्म-रथ-ऊपर निमूल-कदली लौँ झूलि,
रुक्म-रथ छिन्न ह्वै निमेख ही मैँ गिरिगौ॥

[८२]

पच्छ-हत पच्छिनि लौं बिकल-बिपच्छिनि मैं,
धाक बँधी पारथ-सपूत कैं सपूती की।
'सरस' बखानै, यौं प्रमानैं देव, मानौ छई,
भूधरनि हाँक पुरहूत-पुरहूती की॥
कौरव-कपूती के कपोती की सुनात नहीं,
ऐसी तनी तान ताकैं तूती-करतूती की।
बाननि की बायु सौं बिलानी त्यौं उड़ानी कहूँ,
रिपु मैं रहो न रंच रज-रजपूती की॥

[८३]

धाक अभिमन्यु की धँसी यौं, बसी ऐसी हाँक,
आँक न दिखात, परे ब्यौंत बिथराने से।
'सरस' बखानैं कुरुराज कैं कढ़ैं न बैन,
नैनहूँ चढ़ैं न बढ़ैं बाहु बिथकाने से॥
हिम्मति-हुलास हियैं हुमसि हिराने सबै,
उकसि उराने रोख-दोखहूँ सिराने से।
ऐसी भीति-भावना समाई रग-रग माँहि,
डगमग जाँहि पग, मग मैं थिराने से॥

[८४]

मानि कुरुराज धाक-ध्वस्त निज बीरनि कौँ
जानि भट-भीरनि कौँ अस्त व्यस्त कोप्यौ है।
'सरस' बखानै, बान रोप्यौ लै सरासन पैँ,
धाय अभिमन्यु सौँ समन्यु रन रोप्यौ है॥
देखि यह द्रौन, कृपा, कर्न आदि बीरनि लै,
तीरनि की भीरनि मैँ पारथीँहिँ लोप्यौ है।
लखि मुख-कौर लौँ छुट्यौ है कौरवेस ताहि,
लेत रिपु-स्वान, तिन्हैँ मारि बान तोप्यौ है॥

[८५]

जात दुरि जोधन मैँ काह दुरजोधन तू,
तोसौँ बैर-सोधन कैँ हेतु लरिबौ चहौँ।
'सरस' बखानै, यौँ प्रमानै उत्तरेस बीर,
देबि-द्रौपदी कौ दाह-दुःख-दरिबौ चहौँ॥
देखत अनी के नीके चंडिका कैँ खप्पर मैँ,
स्रोनित तिहारौ आनि भूरि भरबौ चहौँ।
पूज्यबर भीम की तिहारी जाँघ तोरिबे को,
तोरि कै प्रतिज्ञा न अवज्ञा करिबौ चहौँ॥

[८६]

पढ़ि-पढ़ि मंत्र घने घोर घेरि घाले जंत्र,
तंत्र हूँ सौं त्रस्त ह्वै न टारै बाल टसक्यो।
'सरस' बखानै, लखि बिलखि अचंभित भे,
थंभित भे अंग औ करेजौ मुरि मसक्यौ ॥
मातु-दया-दीठि सौं भयौ जौ बज्र-पीठ गात,
घात-प्रतिघातनि सौं पोर-पोर कसक्यौ।
तब कुरुराय यौं निहारि हारि असहाय,
हाय! हाय! करत बिहाय खेत खसक्यो ॥

[८७]

जीवन नबीन पाय धोर धराधारिनि सौं,
बढ़ि प्रतिकूलनि पैं चढ़ि हहरानी है।
'सरस' बखानै, को प्रमानै बक्र-चक्र-चाल,
काल की सहोदरी-महोदरी रिसानी है ॥
पानी सौं चढ़ी है, बड़ी बाढ़ सौं बढ़ी है वह,
मन्यु सौं मढ़ी है, अभिमन्यु पैं उफानी है।
प्रतिहत ह्वै कैं त्यौं महान-दृढ़ तीरनि सौं,
बाहिनी बिलोड़ित ह्वै पलटि परानी है ॥

[८८]

श्रौन-गति जुद्ध-महानाद सौं भई है बन्द,
मन्द परि बानी को सबै गति सिरानी है।
'सरस' बखानै, थिर-थकित भये हैं अङ्ग,
दङ्ग-दृग-चञ्चल अचञ्चलता आनी है॥
चालत हूँ बीरनि कैं चलत न क्यौं हूँ कर,
कौरव-अनीक अस्त-व्यस्त ह्वै परानी है।
सकति सबैई तन-मन को गई है मिटि,
जौ बची सौ पाँयनि मैं समिटि-समानी है॥

[८९]

करि-करि केहरि-निनाद पारथी लै संख,
रिपु-भयकारी जयकारी नाद कीनौ है।
'सरस' बखानै, उठ्यौ कूजि चहुँ कोदनि सौं,
मोदनि सौं पांडव-अनी कौं मढ़ि दीनौ है॥
कौरव-चमू मैं भयौ है अपार हाहाकार,
जैजैकार पांडव-चमू मैं भयौ पीनौ है।
बाजे जय-बाजे त्यौं असंख संख एकै सग,
दृग दबे दिग्गज, फनीस भय-भीनौ है॥

[९०]

थकित-थिराये रन-धीरनि कौँ लाजत औ,
भाजत सभीत सैनहूँ कौँ ज्यौँ निहार्‌यौ है।
'सरस' कहै, त्यौँ धाय लखन-कुमार आय,
चाप हूँ चढ़ाय पारथी कौँ ललकार्‌यौ है॥
आव नट-राजानुजा-नदन ! रे स्यंदन लै !
मंदनि मैँ कौबौ कहा मंदता बिचार्‌यौ है।
सुनि कटु बैन उत्तरेस करि बक्र नैन,
धरि धनु-बान पैन बचन उचार्‌यौ है॥

[९१]

अब इहिँ लोक माँहि लखन चहै जौ और,
लखन ! लखै न फेरि लखन न पैहै तू।
'सरस' बखानै, यौँ प्रमानै उत्तरेस बीर,
एक तीर ही मैँ अबै जम-पुर जैहै तू॥
यातैँ जौ चहै है कहिबौ औ सुनिबौ कछूक,
चूक जनि औसर नहीँ तौ पछितैहै तू।
दैहै दोख बादि, कै बिबाद दूर, मान सीख,
भीख लै अभै की जा, न माँगे फेरि लैहै तू॥

[९२]

कहि इमि उत्तरेस आनि हियैं रोषावेस,
देखि दुरभाव-द्वेष औरै निरधार्यौ है।
'सरस' बखानै, बेगि भीषन सरासन पैं,
तीखन लै भल्ल-बान प्रखर सँभार्यौ है॥
लखन निवारौ, बान आवत हमारौ यह,
देखैं तौ तिहारौ बल, ज्यौं कहि पँवार्यौ है।
प्रान-पौन-भच्छक त्यों तच्छक लौं धाय, काटि,
कुरुपति-नन्दन कौं स्यंदन पैं पार्यौ है॥

[९३]

लखि निज लाल कौं बिहाल पर्यौ, काँप्यौ कछू,
भाँप्यौ नन हाल हों करेजौ कर गहिकै।
'सरस' बखानै, चेत आयौ, फिर ह्वै अचेत,
साँसनि उमाहे औ कराहे ठाँय ठहिकै॥
जौं लौं धरि धीर, ह्वै अधीर भजे जोधन कौं,
उठि दुरजोधन प्रचार्यौ कटु कहिकै।
तौ लौं धीर-ढाहिनी प्रचंड रक्त-बाहिनी मैं,
बाहिनी के खपिगे कितेक बीर बहिकै॥

[९८]

सुनि अभिमन्यु की तमातम तमाम देह,
पाय ज्यौं घृताहुति प्रचंडानल तमकी।
'सरस' बखानै, लाल-लोचनि मैं लाली लसी,
नीठि दीठि दामिनी सी दम-दम दमकी॥
मरकत ह्वै ज्यौं प्रतिभाति पुखराज-प्रभा,
त्यौं ही ओप आनन-गुराई गारि गमकी।
मंजुल-मयंक-मुख-मंडल मैं मंडित ह्वै,
मंगल की मानौ उई ऊषा चारु चमकी॥

[९९]

'जै जै धर्मराज' टेरि, 'पारथ ! महद्रथ जै,'
'जै जै कृष्ण' टेरि ज्यौं जयद्रथ पैं धायो है।
'सरस' पढ़ै, यौं बढ़ै जौलौं बीर तौलौं आय,
क्राथसुत पथ पैं बितुंड-झुंड लायौ है॥
देखत ही देखत बिदारि सिंह-सावक लौं,
बाननि कौ जाल बिकराल बिखरायौ है।
छाँटि जुग बाहु, काटि सीस क्राथ-नंदन कौ,
स्यदन पैं पारथी पताका फहरायौ है॥

[१००]

ताकौँ देखि पांडव-चमू मैँ मची जैजैकार,
हाहाकार कौरव-चमू कैँ कै सिधाये हैँ।
'सरस' बखानै, देखि भाजत बृहद्बल कौँ,
नृपति बृहद्बल सकोप बेगि धाये हैँ॥
आवत हीँ आवत सुभद्रा-सुत मारि मारि,
बाननि बिदारि तिन्हैँ भू पर गिराये हैँ।
त्यौँ ही धाय, आय कर्न घोर-घने अस्त्र-सस्त्र,
बीरबर पारथ-कुमार पैँ चलाये हैँ॥

[१०१]

बेगि सब कर्न कैँ पँवारे अस्त्र सस्त्र काटि,
छाँटि कै तिहत्तर लै तीखे तीर मारे हैँ।
'सरस' बखानै, कर्न कौँ बिदारि उत्तरेस,
कोपाबेस लाय धाय द्रौन पैँ प्रचारे हैँ॥
बीर-बर-बारन कौँ पायौ ना निवारन कै,
सैनिक-सवारन कैँ बृन्द गये मारे हैँ।
चारौँ ओर केवल सुनात घोर हाहाकार!
दीखत अपार रक्त-धार के पनारे हैँ॥

[१०२]

जात गुरु द्रौन पैं बृहन्नल- कुपूत कहा ,
देखैं करतूत जौ दिखाइबे कौ दावा है।
'सरस' बखानै , व्यर्थ नाचत है नाच कहा ,
जाँच महा सूरनि कौं, काटै कहाँ कावा है ॥
काहे जात श्रान्त ह्वै अवै हीं सान्त-सागर पैं,
देख तौ इतै हूँ रंच कैसी दाह-दावा है ।
कहि कुरुनाथ यौं उठाय अस्त्र-सस्त्र हाथ ,
रोंकि पारथी कौ पाथ तापैं कियौ धावा है ॥

[१०३]

जेते अस्त्र-सस्त्र घोर घाले कुरुनाथ तिन्हैं,
पारथी निपाते ज्यौं सनाल कंज सर कैं ।
'सरस' बखानै, अङ्ग दङ्ग दुरजोधन कैं,
थकित थिराने, रहे एक न असर कैं ॥
परत परान लै परान-हेत पाछैं पाँव,
आछैं दाँव पेंच चातुरी कैं साथ सर कैं ।
हँसि अभिमन्यु कह्यौ हेर-फेर चौसर कैं,
देखौ तात ! देत काम सामने न सर कैं ॥

[१०४]

यौँ लखि सकाय सैन बिलखि पराई उत ,
इत मुरि पारथी जयद्रथ पैँ धायौ है ।
'सरस' बखानै , तेज-वायु-व्योम-तत्वनि कैँ ,
सत्वनि-रचाये बान-बृन्द बिखरायौ है ॥
साहस बिहाय भजे साहसी हूँ हा ! हा ! करि ,
जोई रह्यौ सोई सुर-पुर कौँ सिधायौ है ।
लखि यह दारुन-दसा कौँ रोप-रक्त-बर्न ,
कर्न लौँ चढ़ाये धनु कर्न बीर आयौ है ॥

[१०५]

तजि उपकरन बृथाके जौ कर न थाके ,
बाँके रन कौसल कै करन ! दिखावौ तौ !
'सरस' उचारै , अभिमन्यु यौँ प्रचारै हँसि ,
चारौ फल आनि कृती-बान कैँ चखावौ तौ ॥
प्रखर-प्रताप-दाप अग्नि-ज्वाल जैसे ऐसे ,
जामदग्नि सौँ जो सिख्यौ सो हमैँ सिखावौ तौ ।
डोलत सिपाही आनि स्याही मुख-ऊपर लै ,
भू-पर बिजै कौ लेख हम सौँ लिखावौ तौ ॥

[१०६]

कहि इमि-पारथी सँभारयौ बीर-आसन त्यौं,
साँसनि-उसाँसनि कौं साधि भूमि भमक्यौ ।
'सरस' बखानै, जोरि, मोरि, भृकुटोनि दाबि,
चाबि अधरानि, कोप ओप आनि चमक्यौ ॥
ताकि तकि तानि तोर-तीखौ लै तमारिज कों,
ताड़ित कै ताव मैं तमाई-ताय तमक्यौ ।
हुँकरत कर्न की सनाह भेदि, छाती छेदि,
फुंकरत बान-ब्याल धाय धरा धमक्यौ ॥

[१०७]

चल-दल-पात ज्यौं प्रभंजन-प्रचालित ह्वै,
काँपि कर्न त्यौंही चाँपि छाती ठाँय ठहिगे ।
'सरस' बखानै, साधु साधु अभिमन्यु बीर!
चाहि यौं सराहि फेरि द्वेष-दाह-दहिगे ॥
सक्र-सुत-नंद मंद-मंद मुसुकाय जौलौं,
रंग आनि अङ्गनि उमङ्गनि उमहिगे ।
तौलौं सल्य आदि बीर धाये धरि धीर किन्तु,
तीर पारथी कैं खाय पीर पाय रहिगे ॥

[१०८]

गहि बर-बीरनि की जौपै रन-रीति-नीति,
एकै एक बीर उत्तरापति सौँ लरि है।
'सरस' बखानै, लखि सकुनि प्रमानै यह,
एकै एक करि यौँ सबै कौ यह मरि है॥
यातैँ याहि बेगि मिलि बीर धरि धीर हनैँ,
ना तरु हमारी जान सारी सैन हरि है।
आधौ हूँ न साधौ सधौ होत एक पारथ कैँ,
द्वै द्वै भये पारथ कहाँ सौँ पूर परि है॥

[१०९]

सुनि सकुनी की गुनि नीकी हियैँ धाय बीर,
आय चहुँघा सौँ पुनि पारथी कौँ घेर्यौ है।
'सरस' बखानै, कृप, कर्न, कृतबर्म, द्रौन,
द्रौनी, सल्य काहू ना अनीति-नीति हेर्यौ है॥
मंडल रचाय नीच लाय बीच माँहि ताहि,
बिकट नराचनि की आँचनि मैँ प्रेर्यौ है।
लखि यह उत्तरेस बिलखि हियैँ मैँ कछु,
धायौ कर्न पै सधीर "जै जै कृष्ण" टेर्यौ है॥

[११०]

आवौ बान-पथ पैं न रथ पैं, लुकाने जाव,
एक तुम कारन हौ यहि रन-रारि कैं।
जेहि वल भूलि, प्रतिकूल ह्वै रहे हो फूलि,
तूल लौं उड़ैहौं ताहि देखत तमारि कैं॥
'सरस' बखानैं, हम बचन प्रमानैं आजु,
बचन बचाये हूँ न पैहौ त्रिपुरारि कैं।
मरन निवारो चहौ करन! हमारो तव,
सरन लहौ औ गहौ चरन मुरारि कैं॥

[१११]

सुनि फबती सी उत्तरेस की प्रतापो कर्न,
रोष-रक्त-वर्न कै सँभारी सक्ति कर मैं।
'सरस' बखानै, कछू आन्यौ मुख सौं न बात,
घात करिबौई ठीक ठान्यौ है समर मैं॥
'जयति मुरारे' त्यों पुकारे अभिमन्यु बीर,
तीर लै करारे चारि मारे हरबर मैं।
मोह आदि दादि कैं निपाटि देत जैसैं भक्ति,
तैसैं सक्ति दीन्हीं काटि आवति अधर मैं॥

[११२]

बिफल बिलोकि सक्ति कोप्यौ कर्न रोप्यो रन,
खैँचि धनु कर्न लौँ असीत-सर मारे हैँ।
'सरस' बखानै, अभिमन्यु-कौंच ऊपर वै,
ऐसे गिरे जैसैँ बुन्द बारिद तैँ डारे हैँ॥
बोले द्रौन देखि. धन्य प्यारे अभिमन्यु! फेरि,
कर्न कोँ अधीर लेखि बचन उचारे हैँ।
जौलौँ सिष्य-पारथ सपूत धनु-धारी इमि,
धारे कौच तौलौँ बान बिफल तिहारे हैँ॥

[११३]

अनुमति मानि आनि सोई मति कर्न बीर,
तीखे तीर तीसक सरासन पै साजे हैँ।
'सरस' बखानै, अनजानै पारथी को धनु,
काटि हूँ महारथी कहावत न लाजे हैँ॥
छिन्न बिसिखासन कैँ लीन्हैँ जुग भाग भिन्न,
पारथ-कुमार यौँ धरीक लौँ बिराजे हैँ।
मंडित-प्रताप सभु-चाप करि खंडित ज्यौँ,
खंड-जुग लीन्हैँ रामचन्द छबि छाजे हैँ॥

[११४]

चकि-जकि रंच ही प्रपंच पेखिबै कौँ पुनि,
भौँहनि मरारि मुख मारि ज्यौँ निहार्‌यौ है।
'सरस' बखानै, धनु-छेदक तमारिज कौँ,
देखि उत्तरेस बीर बचन उचार्‌यौ है॥
छाजत न ऐसौ तुम्हैँ कर्न! सूरबीर-बृती,
कीन्ही कुकृती क्यौँ अरे! ज्यौँ कहि धिकार्‌यौ है।
त्यौँही कृतबर्म नीच पाय बीच मारे हय,
ताकैँ सारथी कौँ कृपाचारज सँघार्‌यौ है॥

[११५]

धनु-रथ-सारथी-बिहीन पारथी ह्वै इमि,
रूखे से, सके से, रहे सूखे से, सकाने से।
'सरस' बखानै, ह्वै सधीर भरि नीर नैन,
बोले बर बैन सूत सौँ सनेह-साने से॥
उरिन हमारैँ रिन सौँ सुमित्र! ह्वै कैँ लहौ,
सुगति पवित्र, रहौ सुकृति-समाने से।
अब कहिबै कौँ और औसर नहीँ है बस,
जै! जै! कृष्ण!!! कहत सिधावौ घमसाने से॥

[११६]

एती बेर ही मैं धँसे ही मैं बान केते पैन,
चित्त पारथी कौं ह्वै अचैन अकुलायौ है।
'सरस' बखानै, अस्त्र-हीन त्रस्त बालक पैं,
सस्त्र घने घालक रिपूनि बरसायौ है॥
धर्म रजपूती कौ, सपूती कौ बिचारि मर्म,
कर्म लखि कौरव-कपूतो कौ रिसायौ है।
ठायौ है हियैं मैं बस लोबौ अरु दीबौ प्रान,
पानि मैं मियान सौं कृपानि काढ़ि धायौ है॥

[११७]

आई बीर-पानि मैं मियान सौं कृपानि कढ़ी,
पानी-चढ़ी बाढ़ सौं प्रगाढ़ गढ़ी ढावै है।
'सरस' बखानै, त्यौं बिपच्छिनि कौं पच्छिनि लौं,
लपकि लपालप खपाखप खपावै है॥
सक्र-असनी लौं चक्रब्यूह की अनी लौं घूमि,
चूमि-चूमि भूमि पुनि ब्यौम कौं सिधावै है।
रिपु-बल-साली सैन सघन-घनाली माँहि,
खेल चंचला लौं चारु चमक दिखावै है॥

[११८]

बीर अभिमन्यु कैं सुपानी की कृपानी माँहि,
पानी को धरी जो धार धीरज उचाटै है।
'सरस' बखानै, गति विषम बहै सबेग,
थावर औ जंगम दुहूँन कौं उपाटै है॥
छाँटि-छाँटि भूमिधर-धर धरनी पैं ढाइ,
बिग्रहीन-बंध प्रतिबंधनि निपाटै है।
उमँगि उमंगनि लौं तरल तरंगनि लै,
चलि प्रतिकूल पैं करारी काट काटै है॥

[११९]

जीवन की समर-पिपासा होति जासौं सान्त,
आसा-पास-भ्रान्त प्रान मुक्ति-मोदता लहैं।
'सरस' बखानै, धार बिमल बिलोकि जासु,
मीन-मन कौतुक कलोल करिबौ चहैं॥
जामैं ह्वै बिलीन-लीन पानीदार हूँ प्रगाढ़,
छिप्रबाहिनी कैं सरदार बाढ़ मैं बहैं।
पानी पारथी की है कृपानी मैं विचित्र धरो,
मित्र औ अमित्र जासौं जीवन नयौ लहैं॥

[१२०]

कढ़त मियान-गर्त सौँ सुदामिनो लौँ कौँधि,
चख चकचौँधि चलै यौँ प्रभानि पागी है।
'सरस' पढ़ै त्यौँ बढ़ै लपकि प्रभंजन मैँ,
पाय रिपु-प्रान-पौन और जोर जागो है॥
जीवन उड़ाय ताप-जोवन-बिलासिनि कौँ,
दलदल हूँ कौँ छारिबै मैँ अनुरागी है।
पानीदार पारथ-सपूत की कृपानी गत,
पानीदार धार मैँ बिलीनि बड़वागी है॥

[१२१]

कर करबाल काल-जीभि सी कजेवा करै,
काटि कै रिपूनि, जौ जनेवा ताकि तमकी।
'सरस' कहै त्यौँ लखि लाथनि की भीति, उठी,
सैन-भीति देखि द्रौन द्रोह दाव दमकी॥
राखैँ एक, छीजत अनेक, साँचि घाल्यौ बान,
चंद की कला लौँ खड्ग खंडित ह्वै चमकी।
सुबरन-मूठि मैँ रही जौ पारथी कैँ कर,
सोऊ व्यर्थ मूँठि लौँ मही मैँ परि ठमकी॥

[१२२]

धायौ दंड लै उदंड बैरिनि कौं दंड देत,
मानौं काल-दंड लै प्रचंड जम धायौ है।
'सरस' बखानै, बड़े बीर रन-धीरनि कौ,
रन कौ उछाह-चाह-साहस सिरायौ है॥
घात-प्रतिघात कै रथीनि त्यौं महारथीनि,
सारथीनि साथ नर्क-नाथ पैं पठायौ है।
ह हा तात मात मचो त्राहि त्राहि की पुकार,
हाहाकार! कौ अपार नाद नभ छायौ है॥

[१२३]

टूटे अस्त्र-सस्त्र देखि छूटे अवसान जबै,
त्रस्त ह्वै कछूक अभिमन्यु अकुलायौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं प्रपंचिनि-प्रपंच लेखि,
पेखि भरि बानन कौ आनन उठायौ है॥
कहि कटु बैन नैकु नैन-मुख बक्र करि,
अक्र करि सैन रथ-चक्र गहि धायौ है।
सक्र-मदहारी चक्रधारी ह्वै सक्रुद्ध मानौ,
भीष्म-जुद्ध दृस्य आय फेरि दुहरायौ है॥

[१२४]

कीन्हीं मार भारी चक्र लैकै चक्रधारी-सम,
सारी सैन भाजी, बीर--मंडल सकायौ है।
'सरस' कहै त्यौं, कह्यो द्रोन! नीति--पंडित ह्वै,
खंडित कै खड्ग क्यौं अधर्म उर ठायौ है॥
एते माँहि हा! हा! करि धाये धरि धीर बीर,
मारि-मारि तीर काटि चक्र हूँ गिरायौ है।
छिन्न निज-चक्र, छल-चक्र, विधि-चक्र लेखि,
पेखि घनी आपदा गदा लै बाल धायौ है॥

[१२५]

'जै जै कृष्ण'! टेरि बीर भीम, मारुती लौं चल्यौ,
दल-बल सत्रु कौं दल्यौ है, बिचलायौ है।
'सरस' बखानै, त्यौं दुसासनी सनी लौं आय,
लाय असनी लौं गदा-जुद्ध ठहरायौ है॥
दोऊ बीर बालि औ सुग्रीव लौं प्रहार करैं,
घात-परिहार करैं, कोऊ ना थिरायौ है।
घात प्रतिघात सौं दोऊ कैं सिथिलाये गात,
दोऊ परे ब्याकुल, न कोऊ उठि पायौ है॥

[१२६]

साँसनि सँभारि ह्वै दुसासनि सचेत उठ्यौ,
थहि थहि गात औ करेजौ कर गहि कै।
'सरस' बखानै, त्यौं थिराय, बल पाय, धाय,
कीन्ह्यौं पारथी कैं सीस घात रहि रहि कै॥
खल-दल कौरव कौ बोल्यौ बीर वाह! वाह!!
आह! आह!! द्रौन कै रहे हैं ठाँय ठहि कै।
एकै बेर पारथी दुसासनि कौं जोयौ बस,
सोयौ है सदा कौं परि 'जै जै कृष्ण'! कहि कै॥

[१२७]

प्रेम-पय-बन्धुता कौ कपट-खटाई पाय,
द्वेष-दधि, खोटी लै खटाई जम्यौ घर मैं।
'सरस' बखानै, सोई रोष की रई सौं पुनि,
फूटि-फैलि आयौ ह्वै अनी कौ रस कर मैं॥
बहुत बिलोड़ित विषैलौ ह्वै महीपन लै,
जायौ नवनीत-बिष, जैसौ बिषधर मैं।
तासौं बीर-बालक सुभद्रा कौ लड़ैतौ-लाल,
ह्वै बिहाल सोयौ परि जीवन-समर मैं॥

[१२८]

लीन्ह्यौ खेत भारी कुरुनाथ सौं अकेलैं जाय,

मन कौ कियौ है धाय-धाय हल-चल तैं ।

'सरस' बखानै, अरि-हर सर सौं बखेरि,

हेरि अन्तराय कौं निकाय हर्‌यौ तल तैं ॥

सींचि निज सर तैं निकासे पुनि जीवन सौं,

टारी अरि-ईति-भीति सारी बाहु बल तैं ।

काटि-काटि फूले-फरे बिरवा सुकीरति कैं,.

रासि कै सुभद्रानन्द सोयौ परि कल तैं ॥

[१२९]

पारथ-सुभद्रा धन्य ! धन्य ! अभिमन्यु बीर,

बिस्व बलिहारी है तिहारी या सपूती पैं ।

'सरस' बखानैं, यौं प्रमानैं नर किन्नर हूँ,

मानैं दुख जच्छ कौरौ-पच्छ करतूती पैं ॥

बीर-नीति-पालक ह्वै ऐसी एक बालक पैं,

कीन्ही हा ! अनैसी कसि कमर कपूती पैं ।

सब सुर-मंडल प्रचारै नभ-मंडल तैं,

धिक ! धिक ! ऐसी कुरुराज ! रजपूती पैं ॥

मङ्गल-कामना

—:०:—

जाकौ सत्व अखिल-अनन्त बिस्व-मंडल मैं,
ब्रह्म मैं महत्व जासु बेद कहिबौ करै।
'सरस' बखानै, जाहि बिबिध-बिधान आनि,
साधक सयान लै समाधि चहिबौ करै॥
जड़-जग-जीवन कौं जाकी जोति जोहे बिनु,
छिन छिन मोहे महामाया गहिबौ करे।
जासौं हीन ह्वै अतत्व होत तत्व सोई सत्य,
मन-बच-काय मैं हमारैं रहिबौ करै॥

❀ ❀ ❀ ❀

काव्य-समाप्ति

सिधि, बसु, निधि, ससि बिक्रमी, पौष-मकर गुरुवार ।
'सरस' काव्य सकुसल भयौ, पूरन सकल प्रकार ॥

परिशिष्ट

शब्दार्थ-सूची

[सम्पादक—भूमकलाल "मधुप", प्रयाग]

अ

अङ्क—उपाय, तरकीब, विधि
अनीहूँ—सेना भी (अनीक)
असकुनी—बुरे लक्षण-युक्त. अशकुन वाला
अन्यूह—दुरूह, कठिन
अर्भक—शिशु
अनायास—अकस्मात्
अनैसी—अनिष्ट, अप्रिय
अठानी—असङ्कलिपत, अविचारित
अरुझे—उलझे
अखंडल—इन्द्र
अनुहारि—वेष-भूषा बनाना (बनक)
अमोघ—अव्यर्थ, अचूक
अनीठि—अनिष्ठ
औचकि—अकस्मात्
असनी—बज्र
अक्र—अकर्मण्य
अस्त व्यस्त—तितर-बितर
अवज्ञा—अपमान, तिरस्कार, निरादर, आज्ञोल्लंघन
अछुत—रहते हुए, मौजूदगी में
अभिरिगो—जुट गया
अधर—बीच में
असीत—अस्सी (८०)
अबाय—अवाक्
अभिहारी—जादूगरी
अवसान—होश हवाश

आ

आनि—आकर
आँस—आँसू

इ

इती—इतनी

उ

उसाँसनि—उच्छ्वासों
उद्र—उदर, पेट
उराई—समाप्त होना
उच्चारन—उच्चारण करना
उमहि—उलझ गये
उई—उदित हुई
उकसि—उठकर
उनाये—छा दिया (उनए)
उदंड—कठिन

ऊ

ऊन—कम, न्यून

ओ

ओप—कान्ति, चमक, आभा
ओर्‌यो—ओड़ना, बचाना

औ

औचक—अकस्मात्

अं

अंक—उपाय

क

कै—कर के
कान कर लीजिये—सुन लीजिये
कैतौ—या तो, अथवा
कोटि—धनुष के दोनों सिरे, करोड़ों
काल—समय, मौत
कन्दुक—गेंद
कानि—मर्य्यादा
कृपानी—तलवार
कपोती—कबूतरी
करन—हाथों
केत—पताका
कीर—तोता
करकस—कर्कश, कठोर
का-कत—क्या, कहाँ
कर—किरन, हाथ

ख

खमंडल—आकाश-मंडल

ग

गरि—गिरा देना, विनष्ट करना
गर्त—गड्ढा
गनक—ज्योतिषी
गुरु—बृहस्पति, गुरु

च

चकि—चकित होना, आश्चर्य्यान्वित होना
चक्र-ब्याज—सूद दर सूद और चक्रव्यूह के ब्याज (मिस) बहाने से
चंद्रहास—तलवार
चकायो—चकित होना
चमू—सेना
चोप—चाव, उल्लास
चल-दल-पात—पीपर का पत्ता
चामीकर—सुवर्ण, सोना

छ

छीजिए—नाश करना
छिप्र—शीघ्र

ज

जकि—जड़ीकृत होना
जीवन—पानी, प्राण
जिष्णु—इन्द्र
ज्या—प्रत्यंचा, धनुष की डोर
ज्वै—देखना, रास्ता देखना

ठ

ठहि—स्थिर हो जाना

ढ

ढिग—समीप, पास
ढारैं—गिराना

त

ताकत—देखना, शक्ति
तिरै—तैरता है
तूल—रुई
तमारि—सूर्य्य भगवान
तमारिज—कर्ण—(सूर्य्य-पुत्र)
तमाई—ताँबापन
तच्छक—सर्प

थ

थरकन लागी – फड़कने लगी
थहरि – काँपना
थिरि—स्थिर

द

दुरन्त – बुरे परिणाम वाला, कुफलप्रद
दच्छ—चतुर
दरि—नाश करना, दलित करना, दरना
देवगायकास्त्र-(देव + गायक + अस्त्र) अर्थात् गंधर्व-अस्त्र

ध

धनञ्जय - अग्नि, अर्जुन
धूम – धुँआ, धूमधाम
ध्वस्त—नष्ट, विध्वंस

न

नैसुक- थोड़ा सा, तनिक
नातरु – नहीं तो, अन्यथा
निधन—मरना, उऋृण करना
नहिगे—झुकना, नमित होना
नाराच—बान
नीठि—निश्चय
निषंग – तरकस

प

पार परिहै – सिद्धि प्राप्त होगी
पारथ—पार्थ – अर्जुन
पँवारे—फेंकना
प्रतिकूल—बैरी, प्रत्येक कूल (नदी का किनारा)
प्रभंजन—वायु, नाश करना
पग पारैं—पैर रखना
प्रतिभात—ज्ञात या प्रतीत होना
परावैं हैं—पलायमान होना, भागना
प्रतिहत—टकराकर
पुरहूत – इन्द्र
पति—लज्जा
पूत—पवित्र, पुनीत, पुत्र
पीन—स्थूल
पर्न—पत्ता (पर्ण)
पानि – हाथ (पाणि)
परिकर—कमर

ब

बिथकित—बहुत थकी हुई, श्रमित
बिधायक—विधानकर्ता
बिग्रही—शरीर वाला, लड़ाकू
बिसूरति--स्मरण करना, पछताना, सोचना
बमकत—बमकते हुए, प्रलाप करते हुए
बादि—छुड़ाना
बैस – उम्र
बात—हवा, बातचीत
बानि – आदत, स्वभाव
बिपंचिन—पक्षियों
बिसिख – बान
बिसिखासन – (बिसिख + आसन) धनुष
बाहिनी—सेना, नदी
ब्योंत—उपाय
बायस—कौवा, (बाइस, २२)

बितुंड—हाथी

भ

भटमानी—बीर मानने वाला
भूरि—बहुत
भारती—सरस्वती जी
भौचकि—भ्रम में पड़े हुए
भुराये—भूले हुए
भाथ—तरकस
भाय—भाव
भद्र—अच्छे, श्रेष्ठ

म

मंत्रणा—सलाह, परामर्श
मसक—मच्छड़
मातुल—मामा (श्रीकृष्ण)
मुंडमाली—शङ्कर जी
माखौं—क्रोध करना
मोचत—छोड़ते हुए
मन्यु—क्रोध
मतंगज—हाथी का बच्चा

य

यंत्रणा—यातना, दुःख
यान—रथ

र

रङ्क—ग़रीब, दीन
रुद्र—भयङ्कर, शङ्कर
रद—ओंठ
रोचनि—रुचना, अच्छा लगना
रुक्म—सोना, सुवर्ण
रारि—लड़ाई

रन-ध्वनि }
रणाध्वनि } -(रन=समर+अ-ध्वनि=मार्ग में) अर्थात् रण-पथ में
रई—मथानी

ल

लेखा—हिसाब
लच्छ—लक्ष्य, निशाना, लाखों

स

ससक—ख़रगोश
सक्र—इन्द्र
सव्यसाची—अर्जुन
समन्यु—सक्रोध
सची—इन्द्रानी
सकाई—सशङ्कित होना
सावक—बच्चा
स्यंदन—रथ
सैलजा-सुनन्दन—स्वामिकार्तिकेय
सारत—निकालना
सुपानी—सुन्दर हाथ
स्रौन—कान, श्रुति
सारदूल—सिंह
सावक—बच्चा
सायक—बाण
सूर सरकस—शूर-वीर

ह

हरुवौ—हलका
हुतासन—अग्नि

त्र

त्रपा—लज्जा
त्रस्त—त्रसित